

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-1

खण्ड 'क'

1. (क) मनुष्य के जीवन में कर्मशीलता सबसे जरूरी है। जीवन एक कर्मक्षेत्र है और संघर्ष करके सभी कठिनाइयों, दुःखों व कष्टों का सामना करके विजयी बनते हैं। 1

(ख) महापुरुषों का जीवन हमें संदेश देता है कि महानता का रहस्य संघर्षशीलता और अपराजेय व्यक्तित्व है। परिश्रम, दृढ़ इच्छा शक्ति व लगन आदि मानवीय गुण हमें संघर्ष करने व सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। 1

(ग) कठिनाइयाँ (कार्य में), चुनौतियाँ एवं विभिन्न कष्ट ही जीवन की समस्याएँ हैं। हमें उनका समाधान अपने में निहित श्रेष्ठतम तत्वों की सहायता से करना चाहिए। समस्या अपने साथ संघर्ष लाती है और संघर्ष के गर्भ में विजय निहित होती है। 1

(घ) जब मनुष्य समस्याओं से पलायन कर निष्क्रिय हो जाता है, हिम्मत हार जाता है तभी उसका विकास रुक जाता है। 1

(ङ) 'संघर्ष ही जीवन है' 1

(च) दृढ़-संकल्प, उत्साह एवं साहस, सकारात्मक मानसिकता के साथ संघर्षरत रहकर जीवन की समस्याओं पर सफलता प्राप्त करना ही विजय रथ पर चढ़ना है। यही उसका मनोहारी रूप है। 1

(छ) (i) यशस्वी (ii) दृढ़-संकल्प। 1

(ज) (i) निष्क्रिय (ii) विजय 1

(झ) (i) उत्तरदायित्व + पूर्ण (ii) पार + लौकिक।

2. (क) पाहुन मेघ को कहा गया है जिस प्रकार दामाद या पाहुन बन-सँवर कर आडम्बर के साथ शहर से गाँव आते हैं वैसे ही मेघ विभिन्न रूप धारण कर (काले-भूरे, चमकीले नभ से) आए हैं। 1x5=5

(ख) मेघ नमी भरे प्रदेशों से आर्द्रता लेकर गरजते, उमड़ते हुए आकाश में छा गये हैं।

(ग) गाँव में घर-घर खिड़की-दरवाजे खुल गए और लोग बरसात का आनन्द लेने लगे। धूल भरा वातावरण बदल गया है। पेड़, पीपल के पत्ते व टहनियाँ लहलहाते लगी और मेघों का हृदय से स्वागत किया गया है।

(घ) पुराने एवं विशाल पीपल वृक्षों ने लहलहाकर स्वागत किया है।

(ङ) मेघ आने पर लता (जो विरह में व्याकुल थी) किवाड़ के सहारे ऊपर चढ़ने लगी। उसे शिकायत है कि मेघ पूरे एक वर्ष के बाद आए हैं।

अथवा

(क) (i) कवि ने सदैव ही स्वेच्छा से कँटीली राहों का चयन किया।

(ii) कवि बंधनरहित अथक रूप से चलने वाला राही उसे जीत या हार का कोई भय नहीं, बस चलते जाना है।

(ख) 'पथ-पथ मेरे पतझरों में नव सुरभि भरा मधुमास पला'।

(ग) कवि संसार सागर में मुसीबतों का सामना डटकर करता है। वह भयरहित होकर निरन्तर जीवन पथ पर हार-जीत की परवाह न

करते हुए संघर्षरत रहता है वह सहायता की अपेक्षा किए बिना ही अपनी राह स्वयं चुनता है और उस पर बढ़ता जाता है। यही सबके जीवन का सार है।

(घ) (i) कवि स्वभाव मनमौजी है वह लहरों के टकराने या बाधाओं के आने पर भी हारता नहीं वरन् मस्त रहकर प्यार की भावना से कर्मशील रहता है।

(ii) कवि स्वतंत्रता पसन्द करता है और उसका रसमय मन किसी बाहरी आकर्षण से प्रभावित हुए बिना ही मन की रुचि पूर्ण रचनाओं से श्रृंगारित रहता है।

(ङ) कवि मन स्वच्छन्द एवं चंचल है उसकी गति की नायिका के कजरारे नैन या कजजारे मेघ जो उमड़-धुमड़ कर उसे उद्धेलित करना चाहते थे उसकी स्वयं की भावना को प्रभावित नहीं कर सके जहाँ न जाए रवि, वहाँ जाए कवि। कवि अपने मन का राजा होता है।

खण्ड 'ख'

3. बढ़ती आबादी—देश की बरबादी

तीव्र गति से बढ़ती हुई आबादी किसी भी देश की समस्त को समूल नष्ट कर देने वाला बम है। इस समय विश्व के विकासशील देश इस समस्या से निरन्तर जूझ रहे हैं।

जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में चीन के पश्चात् स्थान है। हमारे देश में लगभग प्रत्येक तीन सेकण्ड में एक जन्म होता है। अतः एक मिनट में लगभग बीस बच्चे तथा एक दिन में बारह सौ बच्चे जन्म लेते हैं। वर्तमान में भारत की आबाद में दर 2.5% प्रतिवर्ष है। हमारी आबादी विश्व की कुल आबादी का आठवाँ भाग है।

कुछ ऐसी धार्मिक व सामाजिक चुनौतियाँ भी हैं जो समस्या को बढ़ावा देती हैं। भारतीय समाज पुत्र प्राप्ति की इच्छा में संतान उत्पन्न कर आबादी में वृद्धि करता है आबादी की अधिकता से देश को विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। खाद्यान्नों की कमी के कारण लोगों को संतुलित आहार नहीं मिल पाता जिससे उनके स्वास्थ्य में गिरावट आती है। बेकारी भी बढ़ी है, क्योंकि सबको समुचित रोजगार के अवसर प्राप्त नहीं होते। कॉलेजों में अधिक भीड़ होने से शिक्षा के स्तर में भी गिरावट आती है। यातायात, रहन-सहन आदि का स्तर भी गिर जाता है। देश के आर्थिक विकास को अवरुद्ध करने में बढ़ती आबादी का बहुत योगदान होता है। अनेक परिवार तो ऐसे हैं जिन्हें एक समय का पूरा भोजन भी प्राप्त नहीं होता। भारत में बढ़ती आबादी के समाधान के लिए अनिवार्य है कि जनसंख्या की वृद्धि दर में कमी की जाए। देरी से विवाह करने से बच्चे कम होंगे। शिक्षा के द्वारा भी हम लोगों को छोटे परिवार के लाभ बताकर जन्म-दर में नियंत्रण के लिए शिक्षा दे सकते हैं। भारत को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध करने परिवार-कल्याण की विभिन्न योजनाओं को अपनाया जाए।

कठोर नियम भी लाभदायक हो जैसे—दो से अधिक संतान होने पर उसे सरकारी नौकरी से वंचित कर दिया जाये। कम बच्चों वाले दम्पतियों को अधिक सुविधाएँ दी जाएँ और अधिक संतान होने पर भारी कर लगाया जाये तो जन-जागरण द्वारा जनसंख्या वृद्धि में नियंत्रण लाया जा सकता है।

4. सेवा में,

माननीय सदस्य

विधानसभा, उत्तर प्रदेश।

विषय : सामुदायिक केन्द्र की स्थापना के लिए अनुरोध।

महोदय,

यह प्रसन्नता का विषय है कि आजकल सरकार विभिन्न शहरों में सामुदायिक केन्द्रों की स्थापना करने में संलग्न है। परन्तु अभी तक हमारे क्षेत्र में सामुदायिक केन्द्र की स्थापना नहीं की गयी है। आपसे विनम्र निवेदन है कि आप एक सामुदायिक केन्द्र हमारे क्षेत्र में अविलम्ब स्थापित कराने की कृपा करें। इस केन्द्र की स्थापना होने पर निश्चय ही इस क्षेत्र की जनता को लाभ होगा। विभिन्न सामुदायिक गतिविधियों को सुचारू रूप से आयोजित करने का अवसर प्राप्त होगा, हम आपके आभारी रहेंगे।

आशा है आप इस ओर अवश्य ही ध्यान देंगे।

आभार सहित।

भवदीय,

क, ख, ग

सचिव

हितकारिणी परिषद

प्रताप नगर कॉलौनी

आगरा (लोहामण्डी क्षेत्र)

दिनांक :

अथवा

सेवा में

शिक्षा निदेशक

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

उत्तर प्रदेश।

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मेरे पड़ोस के सरकारी विद्यालय के प्रधानाचार्य ने मेरी छोटी बहन को छठी कक्षा में प्रवेश देने से मना कर दिया है। यह विद्यालय मेरे घर के नजदीक ही है, मेरी बहन को विद्यालय आने-जाने में किसी भी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं होगी। मैं भी उसकी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त रहूँगा। प्रधानाचार्य महोदय ने प्रवेश देने से मनाकर 'शिक्षा अधिनियम' की अवहेलना की है। अतः उनके विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही करते हुए मेरी बहन को प्रवेश देने के निर्देश जारी करने की कृपा करें। मैं आपका अत्यधिक आभारी रहूँगा।

भवदीय,

क, ख, ग

(अभिभावक)

दिनांक :

5. (i) विभिन्न घटनाओं और समाचारों पर सम्पादक के द्वारा अपनी राय प्रकट करना सम्पादकीय है। प्रत्येक समाचार-पत्र के सम्पादक प्रतिदिन किन्हीं ज्वलंत विषयों पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। इस लेख के लिए सम्पादक स्वयं उत्तरदायी होता है। अतः सम्पादक का नाम नहीं दिया जाता।

(ii) **समाचार**—किसी घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट होती है जिसे जानने की अधिक से अधिक लोगों में रुचि हो तथा अधिक से अधिक लोग प्रभावित हों।

फीचर—जिन लेखों में किसी व्यक्ति, जगह, घटना या समाचार का खुला वर्णन होता है उसे फीचर कहते हैं। फीचर मनोरंजन एवं आकर्षण पैदा करता है।

(iii) **विशेष लेखन के प्रकार**—(1) डेस्क, (2) बीट।

(iv) **बीट का अर्थ**—लेखन और रिपोर्टिंग का विशेष क्षेत्र।

उदाहरणतया—अपराध, खेल, कृषि, अर्थ आदि अलग-अलग बीट कहलाते हैं

(v) **हिन्दी समाचार चैनल**— 1. जनसंदेश, 2. एन.डी.टी.वी, 3. स्टार न्यूज, 4. आज तक।

6. कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ (रिपोर्ट)

नारी का नौकरी में होना आज एक आम बात है। नारियाँ नौकरी करने में गौरव मानती हैं। नारी के नौकरी में आने से समाज की शक्ति दोगुनी हो गयी है जो नारी पहले घर की चारदीवारी में कैद होकर अपनी प्रतिभा को बेकार कर रही थी, अब उसका सदुपयोग होने लगा है। पूरा समाज नारी की क्षमता से लाभान्वित हुआ है। नारी के नौकरी में आने से कार्यालयों की कार्य-कुशलता में सुधार आया है। समाज में आर्थिक समृद्धि बढ़ी है। परन्तु कामकाजी महिलाओं के सामने समस्याएँ भी कम नहीं हैं उनके बच्चे उपेक्षित रह जाते हैं। उन्हें माँ का पूरा स्नेह नहीं मिल पाता। बच्चे गलत आदतों के शिकार हो जाते हैं। नौकरी में आने से नारी का जीवन मशीन बन गया है। उसे ऑफिस के काम के साथ ही घर के सभी काम करने पड़ते हैं। इस तरह वह सदा बोझ से लदी-लदी रहती है। नारी के नौकरी में आने से परिवार का संतुलन बिगड़ने लगा है। अब पति-पत्नी में वह प्रेम सम्बन्ध नहीं रहा है, आपस में तकरार व मतभेद बढ़ गए हैं। पुरुष सहयोगी रूख नहीं अपनाता, जिससे नारी का जीवन बोझिल, चिड़चिड़ा व उदासीन हो गया है। कामकाजी महिलाओं के प्रति सहानुभूति का भाव होना आवश्यक है।

अथवा

युवकों में पाँव पसारती हिंसा की प्रवृत्ति

अच्छे भविष्य की कामना हर व्यक्ति करता है। युवकों में बेहतर भविष्य को सोचकर सब कुछ कर दिखाने की ललक रहती है। अपनी योग्यता को बढ़ाने की सतत कोशिश रहती है, परन्तु कभी-कभी असन्तोष या गलत मनोवृत्ति भी आ जाती है वे समान्यताओं से समायोजन के स्थान पर हिंसा का मार्ग अपना लेते हैं। वे सोचते हैं कि दबंग बनकर वे जीत जायेंगे और अपराध की दुनिया का रास्ता सहज मालूम होता है। चोरी, बलात्कार, नशीले पदार्थ, भू-माफिया अनुशासनहीनता के कार्यों में लिप्त नवयुवक रास्ता भटक जाते हैं और अपने जीवन के साथ समाज व देश के भी दुश्मन बन जाते हैं। बेरोजगार युवाओं के अपराधी हम और शासन तन्त्र भी है। उचित परवरिश का अभाव व भविष्य के प्रति असुरक्षा, अनिश्चितता व अन्धकार ही हिंसा व अहिंसा का विवेक लुप्त कर देता है। वस्तुतः सम्पूर्ण समाज, परिवार व सरकार को इस दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे ताकि देश के भावी कर्णधार सही मार्ग अपना कर अपनी सार्थकता सिद्ध कर सकें।

अथवा

निरन्तर बढ़ती गरीबी (फीचर)

हमारे देश को स्वतंत्र हुए 67 वर्ष हो चुके हैं, किन्तु इस अवधि में गरीबी कम होने के स्थान पर बढ़ी है, दूसरी ओर धनी वर्ग और भी अधिक धनी होता जा रहा है। लगभग चालीस प्रतिशत लोग आज भी

गरीब हैं। लाखों-करोड़ों नर-नारी भोजन, वस्त्र एवं आवास के लिए तरस रहे हैं। यद्यपि राष्ट्र ने गत वर्षों में पर्याप्त आर्थिक प्रगति की है तथापि गरीबी के अभिशाप से मुक्त होने में वह पूर्णतया असफल रहा है। इसका प्रमुख कारण शासन की दूषित आर्थिक नीतियाँ हैं जिसके परिणामस्वरूप गरीबी मिटाने का शासकीय संकल्प फलीभूत नहीं हो पाया है। यदि राष्ट्र के आर्थिक विकास का लाभ उद्योगपतियों तथा पूँजीपतियों को ही मिलता रहेगा, निर्धन वर्ग को नहीं पहुँचेगा और जन-जन को पेट भरने के लिए भोजन, तन ढकने के लिए वस्त्र तथा निवास के लिए मकान उपलब्ध नहीं होगा, तो फिर लोकतंत्र की उनके लिए क्या उपादेयता? वास्तव में देश का कल्याण इसी में है कि गाँव-गाँव में कुटीर उद्योगों का जाल बिछाया जाय। मशीनों को केवल उसी प्रकार का उत्पादन करने की अनुमति प्रदान की जाये जिस प्रकार का उत्पादन हस्त उद्योगों से संभव न हो। इसके अतिरिक्त उत्पादित वस्तुओं के विक्रय की भी सुव्यवस्था हो। यदि दूषित आर्थिक नीतियों का अनुसरण किया जाता रहा तो गरीबी और अमीरी के बीच का अन्तर और भी अधिक बढ़ जायेगा, जिसके फलस्वरूप भुखमरी-आन्दोलन और विद्रोह की आग सुलग उठेगी। सरकार का यह पुनीत कर्तव्य है कि वह इस बढ़ रही आर्थिक असमानता को दूर करने हेतु आवश्यक एवं उचित कार्यक्रमों को सख्ती के साथ कार्यान्वित करे।

अथवा

शहरी विकास की चुनौतियाँ (आलेख)

हाल के समय में अनेक महत्त्वपूर्ण शहरों, विशेषकर दिल्ली और मुम्बई जैसे महानगरों में वैध-अवैध निर्माण के विवादों ने बहुत जोर पकड़ा है। अवैध निर्माण हटाने के नाम पर या फुटपाथों को खाली कराने के नाम पर एक के बाद ऐसे कई आदेश जारी किये गये जिनसे केवल दिल्ली जैसे एक महानगर में ही लाखों की आजीविका छिनने का खतरा उत्पन्न हो गया हो। इससे कोई इन्कार नहीं करेगा कि शहरों और महानगरों में निर्माण-कार्य व फुटपाथों को कई स्तरों पर अनुशासित करना बेहद जरूरी है, लेकिन दूसरी ओर यह भी उतना ही सच है कि लाखों की आजीविका को उजाड़ कर कोई खुशहाल शहर नहीं बसाया जा सकता।

यदि अनुशासन लागू करने का कार्य सावधानी से और लोगों की आजीविका को बचाते हुए किया जाये तो इसका स्वागत ही होगा, क्योंकि शहरी विकास को अनुशासित करने की आवश्यकता तो सभी स्वीकार करते हैं अगर गम्भीर दुर्घटना की संभावना रखने वाला कोई उद्योग रिहायशी क्षेत्र में चल रहा है तो उसे वास्तव में शीघ्र से शीघ्र हटाना चाहिए या बन्द करना चाहिए। यदि कोई रिहायशी क्षेत्र में चल रही दुकान आसपास के लोगों की परेशानी का कारण बन रही है तो उसे पहले चेतावनी मिलनी चाहिए और फिर भी सुधार न करने पर उसे बंद करने के आदेश होने चाहिए। यदि कुछ रेहड़ी वाले सफाई का ध्यान नहीं रख रहे हैं और ज्यादा भीड़ एकत्र कर रहे हैं तो उन्हें सफाई रखने व जरूरत से अधिक जगह न लेने के कड़े निर्देश दिये जा सकते हैं, न मानने पर उन्हें हटाया भी जा सकता है। संक्षेप में कहें तो भरसक प्रयास यह होना चाहिए कि गैर-जिम्मेदार व्यवहार करने वाले या दूसरों की सुरक्षा को खतरे में डालने वाले दोषी के विरुद्ध कार्यवाही अवश्य हो, लेकिन हजारों-लाखों लोगों को बेरोजगार या बेघर करने का निर्णय न लिया जाये। यह चुने हुए प्रतिनिधियों व सरकार की जिम्मेदारी है कि

वह शहरी विकास को अनुशासित करने के साथ ही जनसाधारण के आवास व आजीविका के बुनियादी अधिकारों की रक्षा करे। ऐसे कानून बनाने चाहिए, जिससे जनसाधारण के इन अधिकारों की रक्षा हो सके। सभी निर्वाचित प्रतिनिधियों को इस दिशा में प्रभावशाली भूमिका निभानी होगी।

खण्ड 'ग'

7. (क) (i) कबीर जग को पागल इसलिए कहते हैं, क्योंकि लोग झूठी बात पर विश्वास करते हैं और सच्ची बातें सुनकर क्रोधित हो जाते हैं।

(ii) कबीर शरीर-धर्म का पालन-नियम, व्रत, स्नान, पूजा, पीर-पैगम्बर की पूजा, धर्म-ग्रन्थ पढ़ना, आसन, समाधि लगाना, तीर्थाटन करना, टोपी-माला तिलक धारण करना, दोहे गाते फिरना आदि बातों को बाहरी आडम्बर कहते हैं, वे इन सबका विरोध करते हैं।

(iii) हिन्दू और मुसलमान दोनों स्वयं को श्रेष्ठ मानते हैं और धर्म के नाम पर आपस में झगड़ा करते हैं। कबीर ने उनकी इसी धार्मिक कट्टरता का विरोध किया है।

(iv) कबीर भक्ति के लिए सहज-स्वभाव को सही मार्ग मानते हैं।

(ख) (i) सूर्य को जगत का स्वामी कहा गया है। जब रात में आकाश गंगा का सौन्दर्य जाल फैला हुआ होता है तो वह उसे निहारने के लिए उसकी ओट में छिप जाता है।

(ii) गगन गंगा के मधुर गति गाने के द्वारा कवि कहना चाहता है कि रात में आकाश गंगा का सौंदर्य इतना मनोरम होता है कि सूरज भी उसे निहारने के लिए ओट में छिप जाता है। (सूर्यास्त के लिए कल्पना की गयी है।)

(iii) अँधेरी रात में आकाश-गंगा के निर्मल सौन्दर्य को देखकर चन्द्रमा हैस देता है। वह आकाश-गंगा के तारों में सूरज का रूप देखता है।

(iv) छिपे हुए सूरज, अंतरिक्ष को जगमग और चन्द्रमा की हैसी-इस प्रेम कहानी को देखकर वृक्ष, पक्षी और पुष्प प्रसन्न हो उठते हैं। पक्षी चहकने लगते हैं और फूल आनन्दपूर्वक महक उठते हैं।

8. भाव सौन्दर्य—अक्षर ज्ञान रहित चम्पा (गवाल-वाला) अक्षरों को काले धब्बे मानती है और जब कवि उन्हें पढ़ता है तो वह आश्चर्यचकित होती है कि इन धब्बों से इतने सारे स्वर कैसे आते हैं, वस्तुतः उसकी अज्ञानता उसे अक्षर का महत्त्व समझने में असमर्थ कर देती है।

शिल्प सौन्दर्य—कविता सरल व सादगीपूर्ण है। अच्छर, चीन्हती जैसे ग्रामीण शब्दों का प्रयोग हुआ है। अक्षरों की ध्वनि (स्वर) एक सशक्त व सजीव प्रयोग है। काले-काले तथा खड़ी-खड़ी जैसे पुनरुक्तिपूर्ण शब्दों से अभिव्यक्ति रोचक बन गयी है।

अथवा

भाव सौन्दर्य—सूरज और समुद्र की (सूर्योदय के समय सौन्दर्यपान) प्रेम-कहानी बहुत मधुर मनोरम व उज्ज्वल प्रतीत होती है। उसकी हार्दिक इच्छा है कि वह इसे शब्दों में व्यक्त करे और उसे सारा संसार सुने और पढ़े कि प्रेम-भावना कितनी शक्तिशाली है।

शिल्प सौन्दर्य—प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। कवि प्रकृति के रूप में मानवीय अनुभूति और क्रिया देखता है। सांस्कृतिक शब्दावली का कोमल, मधुर व प्रवाहपूर्ण योग हुआ है।

'मधुर मनोहर', 'बनूँ विश्व की बानी' में अनुप्रास अलंकार की छटा देखने योग्य है।

9. (क) मानव शरीर का निर्माण अग्नि, वायु, जल, भू, आकाश नामक पंच तत्त्वों से हुआ है।

(ख) 'आओ, मिलकर बचाएँ', कविता प्रकृति प्रेम एवं संस्कृति प्रेम की परिचायक है। कवयित्री झारखण्ड के संथाली रंग और जीवन-शैली को बचाना चाहती है। वह अपने क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रभावित है और वहाँ की नदियों, पहाड़ों, वनस्पतियों, पशुओं और मैदानों सभी का संरक्षण चाहती है।

आज अविश्वास के दौर में वह मन के जोश, उमंग व सुनहरे आशापूर्ण सपनों को बचाए रखना चाहती है। वह नव-निर्माण चाहती है।

(ग) किसान की पीड़ा के लिए महाजन व क्रूर कोतवाल को जिम्मेदार ठहराया गया है। महाजन ने अपना ब्याज व ऋण वसूल करने के लिए खेत, बैल और घर-बार बिकवा दिए। उसके कारकुनों ने किसान के जवान बेटे को मार डाला, उसकी पत्नी व बच्ची न बची।

कोतवाल ने पुत्रवधू को थाने में बुलवाया और कुकर्म किया इसी कारण वह कुएँ में डूबकर मर गयी।

(घ) पथिक का मन नीले आकाश और नीले समुद्र के बीच विचरना चाहता है। उसकी इच्छा है कि रंग-बिरंगे बादल उसकी सवारी बनें और वह प्रकृति के खुले आँगन में विहार करें। प्रकृति का सौन्दर्य पान करें।

10. (क) रोटी बनाने तथा बेचने वाले को नानबाई कहा जाता है। मियाँ नसीरुद्दीन के पिता और दादा भी प्रसिद्ध नानबाई थे। रोटी बनाने का काम उनके खानदान में अनेक पीढ़ियों से होता चला आ रहा था। अतः उन्हें खानदानी नानबाई कहा जाता है।

(ख) दिल्ली में राजनीति, साहित्य और कला के क्षेत्र के हजारों-हजार प्रतिभाशाली लोग रोज अपनी चकाचौंध दिखाकर चहल-पहल मचाए रखते थे।

(ग) नसीरुद्दीन रोटी पकाने की कला में बहुत कुशल था और उसका बात करने का ढंग भी कुशल कारीगरों जैसा था, अतः मसीहा कहा गया है।

अथवा

(क) नेहरू जी के लिए अनपढ़ किसानों की पूरे देश और विश्व के बारे में समझाना आसान काम नहीं था। क्योंकि वे केवल अपने गाँव, जिले या प्रान्त तक ही सीमित थे परन्तु उन्होंने अपने महाकाव्यों और पुराणों में विभिन्न कथा-कहानियाँ सुनी थी। उनमें पूरे देश का वर्णन आता था। अतः वे पूरे देश की बातें आसानी से समझ गए। तीर्थ यात्रा के द्वारा भी उन्हें सभी कुछ समझ में आ गया।

(ख) भारतवासी अपने महाकाव्यों, महाभारत आदि पुराणों व तीर्थ यात्रा, चारों धाम से परिचित थे इसलिए पूरा देश उनका जाना हुआ था। अतः समझने में कठिनाई नहीं होती थी।

(ग) कुछ सिपाहियों ने विश्व-युद्ध में विभिन्न देशों की यात्राएँ की थीं या युद्ध के दौरान विदेशों में नौकरियाँ की थीं। 1930 के बाद आई विश्वव्यापी आर्थिक मंदी से भी परिचित थे, अतः इन दोनों बातों में किसानों को पूरे विश्व की बातें समझने में सहयोग दिया।

11. (क) मिया नसीरुद्दीन 'नानबाई' को नानबाई के रूप में प्रसिद्ध थे, क्योंकि वे रोटी की पाक कला में प्रवीण एवं वाक्-चातुर्य में कुशल कारीगर थे।

(ख) लखनऊ आने के बाद मोहन के जीवन में परिवर्तन आ गया। यहाँ उसे अपने घर से दूर रहना था। यहाँ उसे पढ़ने का अवसर मिला। उसे नौकर की तरह रहने के लिए भी विवश होना पड़ा। यह अध्याय बहुत सुखद नहीं परन्तु एक नायापन लिए हुए नया अध्याय अवश्य ही था।

(ग) स्पीति की पहाड़ियाँ कश्मीर, शिमला, कुल्लू-मनाली जैसे पर्वतीय स्थलों से भिन्न हैं। यह भिन्नता अनेक प्रकार की है। जैसे स्पीति के पहाड़ की ऊँचाई 13,000 से 21,000 मीटर तक है तथा अत्यन्त दुर्गम है। यहाँ न वर्षा होती है, न हरियाली है, न पेड़ हैं। यहाँ बर्फ जमी रहती है। सिंचाई का कोई अन्य साधन नहीं है। इसलिए दो-तीन तरह की फसलें जैसे—गेहूँ, सरसों व मटर ही पैदा हो सकती है। यहाँ की जनसंख्या बहुत कम है। यहाँ न परिवहन के साधन हैं न संचार के। सड़कें व बिजली भी नहीं हैं। अतः यहाँ पर्यटक भी नहीं आते।

(घ) नेहरू जी की अवधारणा थी कि हिन्दुस्तान के नदी, पहाड़, जंगल, खेत, सभी लोग जो सारे देश में फैले हुए हैं—भारत माता दरअसल यही करोड़ों लोग हैं। 'भारत माता की जय' से मतलब हुआ इन लोगों की जय। नेहरू जी सभी को समझाते कि तुम भारत माता के अंश हो, इस तरह तुम ही भारतमाता हो। ये सब सुनकर लोग प्रसन्न हो जाते थे।

12. अकेली औरत को समाज में जीवन-यापन के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। काम ढूँढ़ना, मकान तलाश करना, लोगों की गंदी नजरों का सामना करना। ऊलूल-जुलूल प्रश्नों का उत्तर देना बहुत अपमानजनक लगता है। काम में देर होने पर देरी का कारण बताना, पति कहाँ है, बच्चे भी पिता का सहयोग चाहते हैं। कमजोर शरीर होने से शारीरिक, मानसिक रूप से भी स्त्री को सहारे की आवश्यकता पड़ती है।

13. (i) तातुश के घर में लेखिका को इतना स्नेह मिला कि वह अपने सारे दुःख भूल गई। तातुश हर समय उसका ध्यान रखते और किसी चीज की कमी नहीं होने देते थे। उसे पढ़ने-लिखने के लिए प्रेरित किया। बीमारी में दवा, भोजन व आराम देते। उसके बच्चों को बहुत स्नेह दिया। बड़े बेटे को काम पर रखवा दिया। इतना अच्छा व्यवहार देखकर लेखिका सोचती कि 'मेरा इतना सुख अभी तक कहाँ था?'

(ii) लता जी ने करुण रस के गाने ('ऐ मेरे वतन के लोगों') भी पूरी उत्कृष्टता से गाए हैं। 'ओ बाबुल प्यारे' गीत भी प्रसिद्ध है। इन गीतों में पूर्णता, निर्दोषता तथा मार्मिकता है। ये उनके श्रृंगारिक गीतों से बराबरी रखते हैं। यह भी सच है कि लता के श्रृंगारिक गीत भी बहुत मधुर-मोहक तथा हृदयस्पर्शी होते हैं। लता ने दोनों के साथ पूरा न्याय किया है।

